Newspaper Clips
February 25, 2016

आईआईटी जम्मू कैंपस निर्माण की कवायद तेज

http://jammu.amarujala.com/news/city-news-jammu/mou-will-soon-for-iit-hindi-news/

आईआईटी जम्मू कैंपस निर्माण को जल्द शुरू करवाने की कवायद तेज हो गई है। इसके लिए केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय के साथ जल्द एमओयू हस्ताक्षरित होने जा रहा है।

राज्यपाल एनएन वोहरा के सलाहकार परवेज दीवान से मिलने पहुंचे आईआईटी जम्मू कैंपस आपरेशनलाइजेशन कमेटी सदस्यों ने इस आशय की जानकारी दी।

सलाहकार के साथ कमेटी सदस्यों ने कैंपस से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की। सलाहकार ने कमेटी सदस्यों को राज्य सरकार की ओर से भरसक सहयोग का भरोसा दिलाया।

सलाहकार ने कहा कैंपस निर्माण कार्य के लिए प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ाई जाए। इसमें यदि जमीनी स्तर पर किसी प्रकार की अड़चनें आती हैं तो उन्हें प्राथमिकता के आधार पर दूर किया जाएगा।

इस अवसर पर बताया गया कि टीम लगातार संबंधित विभागों और प्रशासन के साथ बैठकें आयोजित कर रही है, ताकि संस्थान को मूर्त रूप देने की दिशा में जल्द काम हो सके।

IIT Jammu Campus Operationalization Committee calls on Parvez Dewan

http://www.dailyexcelsior.com/iit-jammu-campus-operationalization-committee-calls-on-parvez-dewan/

Excelsior Correspondent
JAMMU, Feb 24: IIT Jammu Campus Operationalization Committee headed by its Chairman, Prof S N Singh today called on Advisor to Governor, Parvez Dewan at the Civil Secretariat here.
Commissioner Secretary, Higher Education, Sarita Chauhan, members of the Committee including Deputy

Director, Strategy & Planning, Prof S K Koul, Dean Infrastructure, Prof K N Rao, Incharge IIT Jammu, Prof Rajendar Bahl, and Engineer IIT Delhi, G K Taneja were also present on the occasion.

During the meeting, the members of the Committee discussed various issues pertaining to the operationalization of the IIT Campus here.

The Advisor assured the Committee full support of the Government to expedite the work on ground and address bottlenecks if any in this regard.

The Committee is presently on a visit to Jammu to inspect the site for starting the work on the campus at the earliest. The Committee has been holding series of meetings with all the concerned departments and district administration.

The land for establishment of IIT Jammu has already been handed over to the Higher Education Department. A MoU in this regard will also be signed with the Union HRD Ministry shortly.

Hindustan ND 25/02/2016 P-09

वाईएमसीए के 30 छात्रों ने ऑल टरेन व्हीकल तैयार किया, यह जरूरत के अनुसार चार पहिया और दो पहिया में तब्दील हो जाता है

फरीदाबाद में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों ने बनाया अनूठा वाहन

इनसे सीखें

फरीदाबाद | कार्यालय संवाददाता

बाढ़ या भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा हो या फिर उबड़-खाबड़ मैदान को खेती लायक बनाने की कोशिश अब एक खास वाहन ये काम आसानी से हो सकेगा। ऐसा संभव बनाया है वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने। संस्थान में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों ने एक खास तरह का वाहन तैयार किया है। ऑल टरेन व्हीकल नाम की इस मशीन को एक रिसर्च प्रोजेक्ट के तहत तैयार किया गया है। संस्थान में टीम ने बुधवार को इसे लॉंच किया।

कुछ अलग करने के जुनून में विश्वविद्यालय के तकनीकी क्लब मैकनेक्सट रेसिंग के 30 सदस्यीय दल ने इसे तैयार किया है। ऑल टरेन व्हीकल हल्का, कारगर तथा कुशल होने के साथ उपयोग में काफी आसान है। कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने टीम के सदस्यों को परियोजना की सफलता पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ऐसे प्रोजेक्ट विद्यार्थियों का कौशल निखारने के लिए जरूरी हैं।

फरीदाबाद में वाइएमसीए यूनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग छात्रों ने ऑल टरेन व्हीकल डिजाइन की। • हिन्दुस्तान

टू-व्हील ड्राइव सिस्टम है खास

मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोजेक्ट टेक्निकल हेड डॉ. वासुदेव मल्होत्रा बताते हैं कि वाहन में मौजूद टू-व्हील ड्राइव सिस्टम इसकी खासियत है। वाहन को इस तरह तैयार किया गया है कि इसके चारों पहिये वाहन को गति देते हैं। विपरित परिस्थिति के दौरान वाहन को दो पहियों पर भी चल सकता है। इस दौरान दो पहिये वाहन को गति देंगे और बाकी पहिए सिर्फ घूमेंगे।

आपदा प्रबंधन में निभा सकता है अहम भूमिका

ये प्रोजेक्ट किसी आपात स्थिति के दौरान बचाव व राहत कार्य में अहम भूमिका निभा सकता है। ऑल टरेन का मतलब है कि ये वाहन सभी तरह के मैदानों पर चलने मे सक्षम है। उबड़-खाबड़ रास्तों, कीचड़ में आसानी से चल सकता है।

मारूति और होंडा जैसी गाड़ियों के स्टीयरिंग बनाने वाली सोना कंपनी के साथ टाई-अप किया है। उन्होंने प्रोजेक्ट को देखते हुए खास स्टीयरिंग तैयार करके नि:शुल्क दिया है।

–कामरान शेख, टीम कैप्टन एंड बीटेक फाइनल ईयर छात्र

चैंपियनशिप में शामिल

इस वाहन के साथ संस्थान की टीम अब उड़ीसा के भुवनेश्वर में होने वाली मेगा एवीटी चैंपियनशिप-2016 में भाग लेगी। चार से सात मार्च तक चलने वाली इस चैंपियनशिप में देशभर के संस्थानों से स्नातक और परास्नातक के विद्यार्थी शामिल होंगे।

Financial Express ND 25/02/2016 P-08

HITTING HEPATITIS-C

IISc has developed a vaccine candidate, could bring down the economic burden of the disease

In a country where a fifth of chronic liver diseases cases can be attributed to Hepatitis C viral infections, an indigenously developed vaccine candidate should bring cheer. Researchers at the Bangalore-based Indian Institute of Science have reported pre-clinical trial success for a vaccine they developed against Hepatitis C virus (HCV) genotype 3a—the viral type most commonly found in the subcontinent. The molecular cocktail of HCV-like particles, or HCV-LP, along with a bio-engineered adenovirus vector (commonly used to deliver viral genetic material to cells) mimic the core and envelope proteins of HCV, and trigger an immune response to generate antibodies that could take down actual HCV cells.

Following the pre-clinical trial success—and in the absence of a challenge model for HPV vaccines—the researchers have evinced interest in testing for immunogenicity in higher animals before clinical trials can be carried out. It is here that the government will have to work out a model to allow easier human trials while putting up a protocol to ensure complete safety of subjects. Though there are new generation drugs that battle HCV infections effectively, the cost of such treatment often puts them out of reach of low-income patients. This vaccine candidate would be a blessing for India if later trials prove successful as well—the country already has nearly 12 million HCV patients—given only 20% of the infected are able to naturally clear out the infection.

आईआईटी कानपुर में होगा एटॉमिक एनर्जी पर काम

अमर उजाला ब्यूरो

http://www.amarujala.com/news/city/kanpur/kanpur-hindi-news/iit-kanpur-will-work-on-atomic-energy-hindi-news/

आईआईटी कानपुर में बन रहे नेशनल एयरोसेल फैसिलिटी सेंटर में अप्रैल 2017 से एटॉमिक एनर्जी प्लांट की सेफ्टी और कंप्यूटर कोड डेवलपमेंट सिस्टम को और बेहतर बनाने का काम शुरू होगा।

सेंटर में एक छोटा रियेक्टर लगाया जाएगा जिसमें आईआईटी के सिविल और न्यूक्लियर विभाग भाभा रिसर्च सेंटर के साथ मिल कर तकनीक पर काम करेंगे। इसके लिए फ्रांस आईआईटी कानपुर को एक ऐसी

सिस्टम तकनीकी भी दे रहा है जिससे रियेक्टर एक्सीडेंट कम से कम करने के लिए बेहतर सेफ्टी सिस्टम तैयार किया जा सकेगा। यह जानकारी भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर से आईं प्रिंसिपल को-आर्डिनेटर डॉ. बीके शप्रा और मनीष जोशी ने दी।

भाभा सेंटर की ओर से आईआईटी के इस प्रोजेक्ट पर काम कर रही डॉ. शप्रा और सहयोगी सुनील गंजू आईआईटी कानपुर में डिपार्टमेंट आफ एटॉमिक एनर्जी और आईआईटी सिविल डिपार्टमेंट की ओर से चल रही तीन दिवसीय कार्यशाला में हिस्सा लेने आए हैं।

कार्यशाला के दूसरे दिन बुधवार को स्पेन से आए वैज्ञानिक लुइस हेरांस, जर्मनी के संजीव गुप्ता और गुटेन वेबर, फ्रांस से डिडियर जैकमिन और जापान से अकीहिडे हिडाका ने अपने-अपने देशों में एटॉमिक एनर्जी प्लांट की सेफ्टी के लिए तैयार की जा रही तकनीक और कंप्यूटर कोड सिस्टम पर चर्चा की।

फैसिलिटी सेंटर को 10 करोड़, छह करेंगे पीएचडी

फैसिलिटी सेंटर के लिए बोर्ड ऑफ रिसर्च इन न्यूक्लियर साइंस और भाभा ने लगभग 10 करोड़ की फंडिंग की है। इससे मशीनरी और संसाधनों की खरीददारी की जा रही है। बिल्डिंग भी एक साल में बन कर तैयार हो जाएगी।

सेंटर में आईआईटी के छह पीएचडी स्टूडेंटों को शोध कराने की तैयारी भी की जा रही है। सेंटर पर सिविल डिपार्टमेंट के डॉ. एसएन त्रिपाठी और न्यूक्लियर डिपार्टमेंट की डॉ. शिखा प्रसाद काम करेंगे।

बन रहीं कैंसर की दवाइयां

डॉ. शप्रा ने बताया कि एटॉमिक एनर्जी प्लांट देश में बिजली उत्पादन में भी सहयोग कर रहे हैं। देश को कुल बिजली की डिमांड का 3 **फीसदी हिस्सा इससे मिल रहा है। इसे क्लीन एनर्जी-ग्रीन एनर्जी कहा जाता है।**

छह नए प्लांट बनने से व्यवस्था और बेहतर होगी। उन्होंने बताया कि मुंबई में लगे रिसर्च रियेक्टर की रेडियो फ्रिक्वेंसी से कैंसर की और कई दवाइयां बन रही हैं।

Security lapses at IIT Roorkee; students allege thefts on campus

http://www.pagalguy.com/articles/security-lapses-at-iit-roorkee-students-allege-thefts-on-cam-40380719

IIT Roorkee (IIT-R) has beefed up campus security post the arrest of two alleged terrorist from Haridwar. The Local Intelligence Unit (LIU) of the Uttarakhand Police, and a Quick Response Team (QRT) of the East Bengal Tiger Cantonment, stationed at Roorkee, are now involved in reviewing the security of the institute. But, despite these measures, two thefts have been reported by the students to the security office at IIT-R.

The first incident was that of a stolen cycle reported by a PhD student while he was on leave, away from the campus. He alleged that his bi-cycle, which was locked and parked, was stolen from the parking lot inside campus. The student was then asked to submit a written complaint to the security office for the matter to be investigated further. "It's been more than two weeks since the theft and the matter is still under investigation." said the exasperated student.

The second incident was when the students claimed that a person had entered the hostel rooms and was found stealing clothes during broad day light. He was then handed over to the security officer on duty. Students allege that the person was an outsider as he had no identity card on him. The security office of IITR has not confirmed his identity to PaGaLGuY.

Despite the police being involved in reviewing the security of the campus, no police complaint was filed in either of the incidents. Prof. Dinesh Kumar Naurial, Dean of Students Affairs, said, "These incidents are not that major to involve the police. If in future the need arises, we will consider taking help from the local police as well. Although, we have asked the security guards to conduct a physical frisking of anyone who enters the hostel without identity cards."

IIT-M grads working abroad drop to 20%, shows alumni survey

http://timesofindia.indiatimes.com/city/chennai/IIT-M-grads-working-abroad-drop-to-20-shows-alumni-survey/articleshow/51133075.cms

Chennai: IIT-ians from recent batches are increasingly preferring to work in India when compared to graduates of earlier batches, revealed IIT-Madras alumni survey of 2015.

More than 2,000 alumni members of IIT-M participated in the survey, which indicated that number of IIT-M graduates living abroad had come down by a significant percentage over the past few decades.

Percentage of IIT-M grads living abroad peaked at 40% in the mid-'70s to mid-'90s batches, and has now dropped to 34% post-2000. The drop is even more severe post-2010, down to the 20% range, as per the survey.

Prof R Nagarajan, dean of international and alumni relations at IIT-Madras, said the survey reveals an emerging India-centric nature of the recent batches which is not a surprising trend. "Even donations to the alma mater are now substantially originating from alumni resident in India, whereas till a few years ago, alumni in North America were clearly the largest contributors. This also shows up in the enhanced physical connectivity between the campus and the alumni," he said.

Prof Nagarajan also mentioned that many alumni are spending time in India mentoring students in entrepreneurship and helping them upgrade their skills.

Echoing prof Nagarajan's sentiments, a significant percentage of alums claimed to have made high contributions to India in the survey. "About 40% of alums claim to have made a very high or high contribution to India while 30% of alums claim very high or high contribution outside India, the latter section mainly comprising of a large number of alums from the mid-'70s to mid-'90s batches.

The survey also shows that while the economic background of admitted students has not changed significantly over the decades, a significantly larger fraction of students now come from semi-urban and rural areas.

The survey conducted by an alumnus of the 1973 batch, Gopala Ganesh, also had some interesting insights on other factors such as field of work, number of companies founded and the leadership roles taken over by the alums.

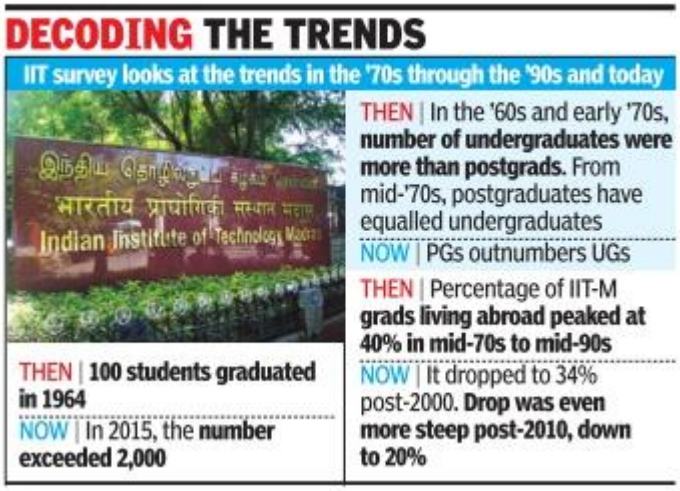

When it comes to the field of work, an estimated 30% of IITM alums said they are currently employed in core engineering. Of those that left core engineering, one third of them are entrepreneurs, while the other two quarters are placed in service industries, and education/ research respectively. The study also showed that post-2005, there has been a surge in IITM grads opting for manufacturing professions, versus IT & software.

Neonatal Ambulances designed by IIT Madras deployed in the state

http://timesofindia.indiatimes.com/city/mumbai/Neonatal-Ambulances-designed-by-IIT-Madras-deployed-in-the-state/articleshow/51128034.cms

Hemali Chhapia | TNN | Feb 24, 2016, 10.11 PM IST

MUMBAI: Health & Family Welfare Department (HFW), Government of Tamil Nadu has deployed 65 neonatal ambulances over the last 18 months based on design and technical recommendations from Healthcare Technology Innovation Centre - HTIC, IIT Madras.

According to the Dept. of Health & Family Welfare, Govt. of Tamil Nadu, design elements and recommendations from HTIC during the project covered crucial aspects for improved safety and functionality of the neonatal ambulances. With the addition of these 65 ambulances, the state will cover 32 districts and is expected to conduct over 28,000 neonatal transports annually.

Bhaskar Ramamurthi, Director IIT Madras, added, "Research projects that yield direct and immediate benefits to the public form an important element of IITM's contributions to society. In this context, it gives us great satisfaction that our design for ambulances specifically meant for transporting newborns that need care has been deployed in our home state of Tamil Nadu".

Mohanasankar Sivaprakasam, Head, HTIC, described, "The process of arriving at the design involved detailed study during live handling of cases to identify all the performance and quality issues. Based on this set of observations, we developed a set of design and technical recommendations to mitigate the issues under the constraints of cost and space".

The new design of the ambulance overcomes challenges like loading the transport incubator, accessing the neonate, maintaining a clean and safe environment, limited space etc. Design modifications made by the HTIC team include installation of air suspension on base vehicle for easy loading on transport incubator by providing adjustable floor height while loading the incubator. It also reduces shock and vibration due to air suspension which provides a better ride experience for neonate and EMT personnel. Adjustable EMT seats and additional foldable seats at the head of incubator provide improved access to neonate. Other additions like an exhaust fan with auto shutter have also ensured a safe and clean environment inside the ambulance.